

वीर तेजा शिक्षण संस्थान, फागी, जयपुर

1. छात्रावास का नाम व पता — वीर तेजा शिक्षण संस्थान, फागी

संचालक संस्था — किसान सेवा समिति फागी।

2. इतिहास —प्रारम्भिक इतिहास— मैं रामावतार चौधरी (निठारवाल) निवासी कुड़ली तहसील फागी (प्रधानाध्यापक) के रूप में शिक्षा विभाग में कार्यरत हूँ। मेरे मन में एक विचार कई बार उठता था कि फागी तहसील में समाज की एक कमेटी या समिति होनी चाहिए। जो समाज हित में सबको साथ लेकर चलें। वर्ष 1995 में विभाग के कार्य से कुछ साथी डिग्गी में कृष्णा धर्मशाला में रुके हुए थे। आवासीय ट्रेनिंग थी उसमें मेरे साथी श्री कैलाश चन्द चौधरी निवासी नोहरा और श्री रामजी लाल पुनिया निवासी भानपुरा को मैंने मेरे विचारों से अवगत करवाया। समाज के लोगों को एक साथ एक जाजम पर लाने हेतु 12 मई 1996 को फागी में एक मीटिंग रखी गई। उस उक्त हमने साइक्लो (स्टेनशील से पेपर छपवाकर) स्टाइल के कागज पर मैं स्वयं और मेरे मित्र कैलाश चन्द चौधरी ने तहसील के प्रत्येक गांव में मौजिज/मुख्य व्यक्तियों उक्त सूचना गांव-गांव जाकर दी। हमने चार दिन फील्ड में ही रात्रि विश्राम किया। उक्त तिथि को सभी में इकट्ठा हुए। कमेटी बनाई गई उसका नाम रखा “जाट सेवा समिति फागी” इस कमेटी ने कुछ प्रयास भी किये। समाज के नाम पर फागी में जमीनी धरातल पर कुछ नहीं हो पाया मामला ठण्डे बस्ते में चला गया। कई साल बीत गये एक बार फिर वापस इसकी जरूरत महसूस की हुई। फिर हमने ‘जाट कर्मचारी अधिकारी फागी’ का एक स्नेहमिलन समारोह डिग्गी जाट धर्मशाला में दिनांक 08/10/2006 को रखा ये मीटिंग “जाट समाज फागी” के इतिहास की अहम बैठक साबित हुई इस मीटिंग में फागी के 126 अधिकारी, कर्मचारियों ने भाग लिया। उक्त दिनांक को ही एक समिति का गठन किया जिसका नाम रखा “जाट सेवा समिति फागी” इसकी एक कार्यकारिणी गठित की जिसमें श्री सीताराम जाट IAS निवासी चौरु को अध्यक्ष चुना गया। श्री सीताराम जी एक कर्मठ एवं समाज के अनमोल रत्न हैं। आज जो जाट समाज की भव्य स्थिति जिसमें फागी में राज्य सरकार से 3 बीघा 12 बिस्वा जमीन निःशुल्क आवंटन करवाई। इसके बाद 5 बीघा 17 बिस्वा जमीन समिति के नाम क्रय की जिसमें एक तीन मंजिला शानदार भवन चारदीवारी सहित बना हुआ है। जिसकी लागत 3 करोड़ श्री रंगलाल सतुल्या निवासी चकवाड़ा कोषाध्यक्ष चुने गये। श्री रामावतार चौधरी निवासी कुड़ली सचिव के पद पर चुने गये इसके साथ ही 11 सदस्य कार्यकारिणी में चुने गये। उस मीटिंग में श्री आर.एस. गठाला जी को आमन्त्रित किया था। वे किसी कारण नहीं आ पाये थे लेकिन एक शुभकामना सन्देश एवं 5100/- रुपये का पहला सहयोग भेजा था जो हमारे लिए प्रेरणा बना।

3. कार्यकारिणी:—

पदाधिकारी	पद	पता
1. श्री सीताराम गियाड़ा	अध्यक्ष	चौरु, फागी
2. श्री रामधन झाझड़ा	उपाध्यक्ष	लकड़िया
3. श्री कैलाश चन्द दोवण	सांस्कृतिक मंत्री	नोहरा बीड़ावला
4. श्री गिर्राज जाट	सदस्य	माधोराजपुरा
5. श्री रामसुख इचौलिया	सदस्य	मण्डावरा
6. श्री कानाराम कांटवा	सदस्य	मैंदवास
7. श्री रामजी लाल खिंयाल	सदस्य	रेनवाल मांजी
8. श्री मगनलाल देवन्दा	सदस्य	चकवाड़ा
9. श्री शिवराज जाट	सदस्य	किशोरपुरा
10. श्री रामजी लाल पूनिया	सदस्य	भानपुरा

11. श्री काशीराम कांटवा	सदस्य	मेंदवास
12. श्री लक्ष्मण निहारवाल	सदस्य	सरस्वतीपुरा
13. स्व. श्री रंगलाल सुतल्या	कोषाध्यक्ष	चकवाड़ा
14. श्री रामावतार निठारवाल	सचिव (मंत्री)	कुड़ली

उक्त कार्यकारिणी के गठन के बाद आगे की सारी जिम्मेदारी अध्यक्ष साहब की रही। समिति का पंजीयन 01/11/2006 को एक माह से भी कम समय में करवाया। जिसका आगे जाकर नाम परिवर्तन करवा लिया जो अब "किसान सेवा समिति फागी" के नाम से जानी जाती है। बीच बीच में मिटिंग होती रही इसी कड़ी में जाट सेवा समिति फागी ने दिनांक 25/11/2007 को खेड़ा बालाजी में विद्यार्थी सम्मान समारोह रखा। इसमें मुख्य अतिथि श्री रणवीर पहलवान जी और श्री आर. एस. गठाला जी उपस्थित रहे। समाज के लोग भी काफी संख्या में उपस्थित रहे। इसमें बालाजी की कृपा रही। फागी तहसील के सभी सम्माननीय समाज बंधु उपस्थित रहे। श्री रणवीर पहलवान जी ने पहला बड़ा सहयोग 5 लाख रुपये दिये। साथ में समाज के नाम जमीन आवंटन करवाने का प्रस्ताव लिया गया। फागी कस्बे के नजदीक ग्राम पंचायत मांदी की चरागाह भूमि में से 3 बीघा 12 बिस्वा की NOC तत्कालीन सरपंच मान्दी श्री हरिराम चौधरी ने दे दी। फाइल आगे बढ़ती गई। कई उनका समाधान करते रहे। पता नहीं कितने आरोप अधिकारियों द्वारा लगाये गये। कुछ जलने वालों ने शिकायतें भी की लेकिन अध्यक्ष महोदय इस काम में लगे रहे। यहां पर तत्कालीन तहसीलदार श्री सुखराम खोखर साहब ने जरूर अपने स्तर पर मदद की। फाइल उपर चली गई और दिनांक 10/05/2008 को समाज के नाम पर मांदी रोड़ पर 3 बीघा 12 बीस्वा जमीन आवंटित हुई। ये हमारी सफलता का अहम पार्ट था। अपनी जमीन पर एक फिर समाज के लोगों की बड़ी मीटिंग का विचार किया ताकि कुछ बड़ा हो सके। उस वक्त तक संस्था के पास रोकड़ राशि नहीं थी शिवाय श्री पहलवान के बोले हुए रूपयों के अलावा। बाद में पहलवान जी ने ये राशि दे दी समाज की आवंटित जमीन पर दिनांक 12/10/2008 को बड़ी मिटिंग आयोजित को जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री ज्ञानप्रकाश पिलानिया जी पधारे विशिष्ट अतिथि श्री आर.एस. गठाला जी आये। ये मिटिंग इतनी एतिहासिक रही कि उसी समय मौके पर ही लगभग 88.25 लाख रूपयों की घोषणा दानदाताओं द्वारा हो गई।

श्री पिलानीया जी का प्रभाव ऐसा रहा कि फागी पिछड़ा क्षेत्र माना जाने वाला भाग जिसमें नोटो की बरसात हो गई। दानदाताओं के लिए साफे कम पड़ गये। तहसील के सभी कर्मचारियों ने एक माह की तनखाह उस वक्त 2008 में जिसमें तय हुआ कि प्रथम श्रेणी अधिकारी 31000/- रुपये द्वितीय श्रेणी 25000/- तृतीय श्रेणी 21000/- इससे कम वेतन वाले 15000/- रुपये समाज के नाम देंगे। राजस्थान में यह पहला काम था जो फागी के समस्त कर्मचारियों ने समाज के नाम इतनी बड़ी राशि योगदान में दी। एक बात बता दूं नकद राशि नहीं आई थी केवल घोषणा हुई थी स्वयं पिलानिया जी ने अपने सांसद कोटे से 5 लाख की घोषणा की थी लेकिन जब मैं और अध्यक्ष साहब सिफारश पत्र लेने गये थे तो पिलानिया जी के आंसू आ गये थे उनके शब्द थे 'धन्य हो फागी वालों' अपने तो एतिहासिक काम कर दिया और फिर 10 लाख रुपये दे दिये। अब बारी थी घोषणा किये गये दानदाताओं से राशि संग्रह करने की। कुछ भले व्यक्ति तो स्वयं ही दे दिये। तब हमने एक और निर्णय लिया की समाज के हर व्यक्ति का सहयोग होना चाहिए ताकि उसको गर्व महसूस हो कि ये हमारी अपनी भाती है। हमने 200 रुपये बीघा के हिसाब से चंदा तय किया साथ में बोले हुए से रुपये लेना। चूंकि हमारी कार्यकारिणी में सारे कर्मचारी थे। हमने कर्मचारी इसलिए थे ताकि अन्य

व्यक्ति पार्टी से जुड़ा होता है और उसके विचार दूसरी पार्टी से मेल नहीं खाते और विचारों में टकराव हो जाता है तो हमने कांग्रेस व बीजेपी दोनों को साथ रखा लेकिन कार्यकारिणी में जगह नहीं दी। रुपये उगाने (इकट्ठा) करने के लिए हर रविवार का दिन तय हुआ क्योंकि उस दिन छुट्टी रहती थी। एक ओर निर्णय लिया कि पैसे इकट्ठा करने में आने जाने हेतु जो साधन (वाहन) होगा उसका सारा खर्चा स्वयं वहन करेंगे। समाज के रुपये केवल और केवल समाज हित में ही खर्च होंगे। स्वयं के खर्चे से हमने चंदा इकट्ठा किया जो हमारी सफलता का बड़ा कदम था। कोई अंगुली नहीं उठा सकता था। साथ में कार्यकारिणी तथा साथ चलने वालों ने सबसे पहले अपने स्वयं का रुपया जमा कराया ताकि हम कह सकें कि हमने रुपये दे दिए। समिति का खाता एसबीआई बैंक में खोल दिया। जो भी राशि आती अगले दिन वह राशि बैंक में जमा करवा दी जाती थी। हमारे पास अच्छी टीम बनती गई जिसमें विशेष योगदान दिया उनमें श्री कालूराम बोसलिया, श्री सूजाराम जी धांधा, श्री शिवजीराम जी सिंघानिया, श्री हनुमान जी टोडावता, श्री नारायण जी बोसलिया, श्री पोखर जी बोढ्या, श्री मुकनाराम जी कांटवा, श्री नारायण सिंह जी देवन्दा, श्री रामकरण जी निठारवाल और श्री मदन जी मगोड़ इनके अलावा भी कई समाज के बंधुओं ने मदद की। यहां एक बात ओर हमने ऐसे ऐसे रूप देखे हैं समाज के जहां घर में कुछ भी नहीं लेकिन समाज के लिए देने के लिए लोग तैयार रहे।

समिति के खाते में जब थोड़े रुपये जमा हो गये तब अधिकतर लोगों की राय थी कि जयपुर रोड़ पर फागी कस्बे के पास जमीन ली जावे तब हमने उपखण्ड कार्यालय के पास 5 बीघा 17 बिस्वा जमीन समिति के नाम खरीदी। उसी खरीदी हुई जमीन पर नींव का मुहूर्त दिनांक 16/02/2011 को राज्यपाल गुजरात माननीया श्रीमति कमला बेनीवाल के हाथों करवाया गया। इस कार्यक्रम में श्री हेमाराम चौधरी राजस्व मंत्री, श्री हरजीराम बुरडक कृषि मंत्री, श्री रामलाल जाट वन पर्यावरण राज्य मंत्री, श्री सांवर लाल जाट पूर्व जल संसाधन मंत्री, श्री लालचन्द कटारिया विधायक, श्री रणवीर पहलवान विधायक मालपुरा, साथ में कई प्रतिष्ठित सरपंच, जन प्रतिनिधि, अधिकारी भारी संख्या में 6000-7000 स्थानीय समाज के लोगों के बीच ऐतिहासिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह दिन अविस्मरणीय व रोमांचक रहा। 32000 वर्गफीट में तीन मंजिला भवन बनाया गया। जिसमें 2.50 करोड़ रुपये की लागत आई मुहूर्त ऐसा लगा कि कभी करणी बन्द नहीं हुई शानदार भवन सभी सुविधाओं युक्त मय रंग रोगन तैयार हो गया। अब बारी आई कि इस भवन का उपयोग क्या हो। जब काम शुरू हुआ उस समय हायर सैकेण्डरी स्कूल कम थी। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु हॉस्टल का विचार था लेकिन समय की मांग को देखते हुए इसमें वर्ष 2017 को 8 वीं तक की मान्यता ली गई। अब बारी थी विद्यार्थियों के आने जाने हेतु परिवहन की तब समिति ने दो बसें नई खरीदी इसके बाद फिर आवश्यकता बढी तब तीसरी बस फिर खरीदी इस प्रकार वर्तमान में संस्था के पास चार बस हैं। दो साल स्कूल जमने लगा था कि कोरोना महामारी ने कमर तोड़ दी थी। स्कूल बंद रहे बसों की किश्तें आती रही जो संस्था को बड़ा घाटा दे गई। पर समाज के दानदाताओं ने हिम्मत नहीं हारी वो किश्तें भी चुकाई वर्तमान समय में संस्था ठीक स्थिति में आ जायेगी। स्कूल वर्तमान में 10वीं तक संचालित है। फीस केवल सेवा के रूप में बहुत कम ली जा रही है। अच्छी शिक्षा दी जाती है। पहला बोर्ड इसी वर्ष में है। 210 बच्चे हैं।